# संगीत विशारद (प्रथम खण्ड)
# Sangeet Visharad Part-I (Fourth Year)
## गायन (VOCAL)
## ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक : १५० शास्त्र- ५०, क्रियात्मक-१००

## शास्त्र (Theory)

(१) परिभाषा-प्राचीन तथा अर्वाचीन आलाप गायन पद्धति, जाति गायन, अलप्ति गान, राग लक्षण, निबद्ध तथा अनिबद्ध गान, रागालाप, रूपकालाप, आक्षिप्तिका, विदारी, सन्यास, विन्यास, अपन्यास, देसी संगीत, मार्गी संगीत, अल्पत्व, बहुत्व, सहायक नाद, Diatonic Scale(डायटोनिक स्केल), गायकी, नायकी, ध्रुपद, घातु, मातु।

(२) प्राचीन, मध्य, अर्वाचीन (आधुनिक) कालों में श्रुति-स्वर विभाजन पद्धति का साधारण ज्ञान तथा वीणा पर शुद्ध तथा विकृत स्वर स्थापना।

(३) दक्षिणी तथा उत्तर भारतीय ताल पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।

(४) गीतों के प्रकार- ठुमरी तथा टप्पा।

(५) गायन रचना तथा उनको विभिन्न स्वर लिपियों में लिखने की क्षमता।

(६) गायन के विभिन्न प्रकार: चतुरंग, प्रबन्ध, त्रिवट, होरी इत्यादि की जानकारी।

(७) षड़ज-मध्यम और षड़ज-पंचम भाव, हारमनी, आन्दोलन और आन्दोलन संख्या।

(८) बड़े तथा छोटे ख्याल की स्वर लिपि एवं ध्रुपद तथा धमार की स्वर लिपि विलम्बित, दुगुन, तिगुन, चौगुन और आड़ लयकारियों में लिखनें का अभ्यास।

Scanned by CamScanner

(८) निर्धारित राग समूह में समता-विभिन्नता, अल्पत्व, बहुत्व एवं आविर्भाव तथा तिरोभाव के बारे में पूर्ण ज्ञान।

(९) लिखित स्वर समूहों को देखकर राग पहचानना।

(१०) निर्धारित ताल समूहों के ठेकों को विभन्न लयकारियों में लिखने का अभ्यास।

(११) संगीत के विभिन्न घरानों का परिचय एवं संगीत के प्रचार और प्रसार के क्षेत्र में उनका योगदान, लाभ और हानियां।

(१२) जीवनी तथा इन कलाकारों का संगीत में योगदान- हददु खां, हस्सू खां, बैजूबावरा, गोपाल नायक, अदारंग, सदारंग, उस्ताद बड़े गुलाम अली खां।

(१३) संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध लिखने का अभ्यास-

(क) संगीत और साहित्य।

(ख) लोक गीत।

(ग) भारतीय वाद्य यन्त्र।

(घ) संगीतकारों की समस्या।

(ड़) भारतीय शास्त्रीय संगीत को लोकप्रिय बनाने के लिए सुझाव।

(च) नेशनल कार्यक्रम (रेडियो और दूरदर्शन)।

(छ) संगीत विद्यालयों में संगीत सुधार।

## क्रियात्मक (Practical)

(१) निम्नलिखित राग समूहों में छोटा ख्याल जानना आवश्यक है। ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये विभिन्न प्रकार की लयकारियों सहित ध्रुपद (ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड़ लयकारी)
निर्धारित राग-पूरिया, हिन्डोल, शंकरा, दरबारी कान्हड़ा, अड़ाना, बहार, सोहिनी, जोगिया, मुलतानी, जौनपुरी, तोड़ी, विभास।

(२) ऊपर दिये गये रागों में से किन्ही छः रागों में बड़ा ख्याल जानना आवश्यक है (इन ख्यालों की रचना रूपक, एकताल, झूमरा तालों में होना आवश्यक है) ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों का ध्रुपद गान

Scanned by CamScanner

चारताल, सूलताल, तीवरा तथा बसंत ( मात्रा ९) में होना आवश्यक हैं।

(३) इस वर्ष के लिए निर्धारित राग समूहों में से किन्हीं भी रागों में दो ध्रुपद दो धमार एक तराना एवं एक त्रिपट व एक चतुरंग आवश्यक है। (ध्रुपद तथा धमार आवश्य ही विलम्बित दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लय में होना चाहिये) ध्रुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये पूर्व वर्ष के लिये निर्धारित राग समूहों में ध्रुपद के अतिरिक्त विलम्बित, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयकारी के सहित दो धमार एक होरी तथा एक तराना जानना आवश्यक है।

(४) गायकी की ओर विशेष ध्यान।

(५) कठिन स्वर लिपि को गाना, एक ही समय में कुछ शुद्ध और विकृत स्वरों को गाने का अभ्यास।

(६) किसी अन्य व्यक्ति का गायन सुनकर उसकी स्वर लिपि बनाने का अभ्यास।

(७) सम प्रकृतिक रागों में आविर्भाव तथा तिरोभाव दर्शाना।

(८) विभिन्न ताल और लय में गीत का मुखड़ा गाने का अभ्यास।

(९) ख्याल गायन के परीक्षार्थियों को किसी एक राग में एक ठुमरी का साधारण अभ्यास–पीलू,खमाज और तिलंग ।

(१०) निर्धारित राग समूहों में समता–विभिन्नता, अल्पत्व–बहुत्व, आविर्भाव तथा तिरोभाव का प्रदर्शन।

(११) (क) पूर्व वर्ष के लिये निर्धारित तालों के ठेके ताली–खाली सहित ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड़ व कुआड़ में बोलने का अभ्यास।
(ख) पंचम सवारी, दीपचन्दी, रूपक, जत, गजझंपा, तथा मत तालों के ठेकों के बोल बोलने का अभ्यास।

(१२) आलाप सुनकर राग निर्णय।

(१३) तानपुरे के साथ गाने का अभ्यास अनिवार्य है।

टिप्पणी– पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

Scanned by CamScanner

# संगीत विशारद पूर्ण
# Sangeet Visharad Final (Fifth Year)
## गायन (VOCAL)
## ख्याल एवं ध्रुपद

पूर्णांक : ३००

शास्त्र- १००
(प्रथम प्रश्न पत्र - ५०, द्वितीय प्रश्न पत्र -५०)
क्रियात्मक १२५
मंच प्रदर्शन- ७५

## शास्त्र (Theory)
## प्रथम प्रश्न पत्र (First Paper)

(१) परिभाषा - गायकी, नायकी, कलावन्त, वाग्येकार, ध्रुपद की वाणी, स्वस्थानियम, ग्राम, मूर्छना तथा प्रथम वर्ष से चतुर्थ वर्ष तक संगीत के पारिभाषिक शब्दों की पूर्ण तथा विस्तृत व्याख्या।

(२) (क) गमक तथा उनके विविध प्रकार।
(ख) भारतीय वाद्यों के विविध प्रकार- तत,अवनद्ध,घन,सुषिर।

(३) कर्नाटक तथा उत्तर भारतीय संगीत पद्धतियों का विस्तृत ज्ञान एवं इनका तुलनात्मक अध्ययन।

(४) प्रबन्ध, वस्तु और रूपक का पूर्ण परिचय।

(५) प्राचीन राग रागिनी प्रणाली, प्राचीन आलाप गायन,स्वस्थान नियम, अल्पत्व, बहुत्व और इसकी आधुनिक आलाप गायन से तुलना, रे ध कोमल, रे ध शुद्ध और ग नी कोमल वाले राग।

(६) विभिन्न कालों में श्रुति-स्वर विभाजन, भारतीय और पाश्चात्य स्वरों की आन्दोलन संख्या, तार की लम्बाई से आन्दोलन का सम्बन्ध, राग वर्गीकरण और भारतीय वाद्य।

(७) ख्याल गायन के घरानों का इतिहास एवं उनकी विशेषताएं तथा संगीत में उनकी देन।

Scanned by CamScanner

(८) भरतीय संगीत में ग्राम का महत्व, मूर्छना का पूर्ण परिचय, वाग्येकार, वाणी, आधुनिक थाट, हारमनी, पाश्चातय संगीत के थाट, स्टाफ स्वर लिपि, सहायक नाद और तानपुरा।

(९) हारमोनियम के सम्बन्ध में आलोचनात्मक विवेचन।

(१०) सारणां चतुष्टयी, समान और असमान श्रुतियों के बारे में विभिन्न ग्रंथकारों के विचार।

(११) कर्नाटक ताल पद्धति और उत्तरी संगीत ताल पद्धति में तुलना ।

(१२) तानपुरे से उत्पन्न सहायक नाद-

(क) हारमनी (Harmony)

(ख) मेलौडी (Melody)

(ग) मेजरटोन (Major Tone)

(घ) सेमीटोन (Semi Tone)

(ड़) कॉर्डस (Chord)

(१३) (क) रागों का वर्गीकरण (Classification) उनका पूर्ण इतिहास तथा महत्व एवं उनके सम्बन्ध में विचार।

(ख) पाश्चात्य (Western) स्वर लिपि का साधारण ज्ञान।

(१४) भातखडे एवं विष्णु दिगम्बर स्वर लिपि पद्धति का तुलनात्मक अध्ययन।

(१५) हिन्दुस्तानी संगीत पद्धति के मूल नियम।

## द्वितीय प्रश्न पत्र (Second Paper)

(१) निर्धारित रागों का पूर्ण परिचय एवं इनमें आलाप, तान लिखनें का अभ्यास, रागों का आविर्भाव तिरोभाव तथा अल्पत्व बहुत्व को स्पष्ट करना। लिखित स्वर समूहों को देखकर राग पहचानना।

(२) प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के लिये निर्धारित राग समूहों में समानता तथा विभिन्नता का ज्ञान।

(३) बड़े ख्याल तथा छोटे ख्यालों की स्वरलिपि एक धुपद तथा धमार की स्वरलिपियों को ठाह, दुगुन, चौगुन तथा आड़ में लिखने का अभ्यास।

Scanned by CamScanner

(४) किसी भी गीत को स्वरबद्ध तथा तालबद्ध करना एवं उनको स्वर लिपियों में लिखनें का अभ्यास होना चाहिए।

(५) पाठ्यक्रम में निर्धारित ताल समूहों को विभिन्न लयकारियों में लिखना।

(६) गाने को स्टाफ नोटेशन और अन्य स्वर लिपियों में लिखना, जैसे पंडित विष्णु नारायण भातखडे और पंडित विष्णु दिगम्बर पलुस्कर।

(७) सम प्रकृतिक रागों में अल्पत्व-बहुत्व, तिरोभाव और आविर्भाव दर्शाने की योग्यता।

(८) ध्रुपद और धमार गायन की तालों के अतिरिक्त पाठयक्रम की समस्त तालों को कठिन लयकारियों में लिखने का अभ्यास।

(९) किसी भी कविता को राग और रस के अनुसार स्वरबद्ध करना। नोम-तोम का आलाप स्वर लिपिबद्ध करना।

(१०) जीवनी तथा संगीत में योगदान-
फैयाज खां, डी.वी. पलुस्कर, ओंकार नाथ ठाकुर।

(११) संगीत के विभिन्न विषयों पर निबन्ध लिखनें की क्षमता।

(१२) निबन्ध :-

(क) मस्तिष्क और संगीत।

(ख) संगीत की उन्नति में घरानों का योगदान।

(ग) भारतीय वृन्दवादन।

(घ) भारतीय संगीत के मूल नियम।

(ड़) भारतीय संगीत पर पाश्चात्य संगीत का प्रभाव।

(च) संगीत और स्वर साधना।

Scanned by CamScanner

## क्रियात्मक (Practical)

(१) नीचे दिये गये रागों में पूर्ण गायकी सहित छोटे ख्याल जानना आवश्यक है। धुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिए ठाह, दुगुन, तिगुन, चौगुन, आड़, बिआड़ तथा कुआड़ लयकारियों सहित पूर्ण धुपद जानना आवश्यक है।

### निर्धारित राग

श्री, बसन्त, परज, पूरिया धनाश्री, मियां-मल्हार, शुद्ध कल्याण, मालगुंजी, छायानट, देशी, ललित, रामकली, रागेश्री, गौड़-सारंग, गौड़-मल्हार।

(२) इस वर्ष के लिए निर्धारित राग समूहों में से किन्हीं सात रागों में बड़ा ख्याल जानना आवश्यक हैं। (बड़ा ख्याल झूमरा, आड़ाचारताल, एकताल तथा तिलवाड़ा में निबद्ध होना आवश्यक है) धुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये धुपद, सूलताल, चारताल, तीवरा, मततताल तथा रूद्र ताल में निबद्ध होने चाहिए।

(३) इस वर्ष के लिए निर्धारित रागों में से किसी भी राग में तीन धुपद , तीन धमार, तीन तराना जानना आवश्यक है। धुपद तथा धमार विलम्बित दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड़ लयकारी सहित। (धुपद गायन के परीक्षार्थियों के लिये विलम्बित दुगुन, तिगुन, चौगुन तथा आड़ लयकारी सहित तीन धमार, तीन होरी, तीन तराना जानना आवश्यक है।)

(४) केवल ख्याल गायन के परीक्षार्थियों के लिये पाठ्यक्रम के किसी भी राग में दो ठुमरी -

| | |
|---|---|
| पीलू | खमाज |
| भैरवी | झिंझोटी |

(५) पिछले समस्त रागों की जानकारी सम प्रकृतिक रागों सहित।

Scanned by CamScanner

(६) गानों की और आकार में गाई हुई रचनाओं की स्वर लिपि बनाने का अभ्यास।

कठिन स्वर समुदायों को गाने का अभ्यास।

(७) राग पहाड़ी और आसा में एक गीत ।

(८) निर्धारित राग में एक-एक द्रुत ख्याल उत्तम गायकी अर्थात आलाप, तान, कण, मुर्की, मींड, गमक इत्यादि सहित।

(९) पूर्ण गायकी के साथ एक भजन, एक टप्पा एक चतुरंग एवं एक राग माला जानना आवश्यक है।

(१०) प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के लिये निर्धारित समस्त रागों में समानता-विभिन्नता, अल्पत्व बहुत्व तथा आविर्भाव व तिरोभाव प्रदर्शन करने का अभ्यास।

(११) आलाप सुनकर रागों को पहचानना।

(१२) (क) प्रथम वर्ष से पंचम वर्ष तक के लिये निर्धारित समस्त तालों के ठेके के बोल विभिन्न लयकारियों में बोलने का अभ्यास।

(ख) शिखर, लक्ष्मी, फरोदस्त एवं आड़ा चारताल तालों के ठेके के बोल विभिन्न लय में बोलने का अभ्यास।

(१३) तानपुरे पर गाना अनिवार्य ।

टिप्पणी - पूर्व वर्षो का पाठ्यक्रम संयुक्त रहेगा।

मंच प्रदर्शन- पंचम वर्ष के निर्धारित रागों में से किसी भी एक राग में एक विलम्बित और एक द्रुत ख्याल पूर्ण गायकी सहित। एक ठुमरी या भजन या तराना या भाव संगीत। गायन समय 35 मिनट।

Scanned by CamScanner